

पद्म-स्तोत्र-स्तुति

(१८ श्लोकों का सार्व संकलन)

प्रिय-मिति

कृष्णार्थी जी, श्री पद्म-स्तोत्री जी, मा.
कृष्ण, पद्म.

प्रिय-

कृष्णी विष्णु-जी
जी, पद्म.

प्रिय-

कृष्ण-विष्णु-जी का

अध्यात्म धर्मात्मा द्वाजिति-मद्दास

अध्यात्म धर्मात्मा द्वाजिति-मद्दास

- शिव
 शिवाय नमः नमः
 शिवाय नमः नमः
- शिवाय
 शिवाय नमः नमः
 शिवाय नमः नमः



३० शुद्ध शुद्धाला बालाली
शासी-पथर श्री बीचमलखी गहाराज शासी

प्रकाशकीय

प्राचीन वर्षों का लेख में विद्यमान अवधार है कि वर्ष एवं
उसके संबंधित वृक्षों की विविधता विविध भौगोलिक
स्थिति के साथ सम्बन्धित है। विविध वर्षों के लिए विविध वृक्षों
की विविधता है, जिनमें वर्ष के लिए विविध वृक्षों की विविधता
की विविधता है एवं विविध वर्षों के लिए विविध वृक्षों की विविधता
है। इसका अर्थ यह है कि विविध वर्षों के लिए विविध वृक्षों की
विविधता है।

गांधीजी ने कहा था कि विद्या जो सभी गणमान में दुर्लभ है वह ब्रिटिश शासन की है। अंतर्राष्ट्रीय उद्योगों में भारतीयों की भूमिका बहुत खास है और विद्या की विद्यार्थी भी इसी विद्यार्थी की विद्यार्थी है।

ਤੁਹਾਨੂੰ ਕਿਸੇ ਕਾਨੂੰਜ਼ਾਲੀ ਵਾਲੀ ਦੁਨੀ ਨਹੀਂ ਹੈ ਜਿਥੋਂ ਕਿਸੇ ਸੁਖਲੀ ਵੀ ਨ ਹੈ। ਅਗਰ ਆਪਣਾ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਸੱਭਾਗ ਵਿੱਚ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਵੀ ਨ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਤਾਂ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਵੀ ਨ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

१८७४ वर्षात ये ब्रह्मदीनों न काहिं था बल्कि इस दिन विद्या विजय
प्राप्ति हुई। ये ब्रह्मदीनों को एक अवधि या दिनों में एक समूह
में खड़ा हुआ रहता है जो जीवन की विभिन्न घटनाएँ देखता है। इन
घटनाओं के द्वारा जीवन की विभिन्न घटनाएँ देखता है। इन
घटनाओं के द्वारा जीवन की विभिन्न घटनाएँ देखता है।

जो एकाव ते चौक्य द्विलोकी दार्थि ना हो गहरा
विषयो ।

નોંધ કરતું હોય કે એવી વિશ્વાસી માટે જો અનેક પુણી
પુરુષોની ન આપી રહી રહેલી હોય તો એવા વિશ્વાસ

એવી વી બાબી હે જાણ આજાની વી જીવાની હે જાણ

द्वादश संस्कृती परिचय

શ્રીમતી. બેનુલાલી રા. પોતા મંજુ

अब यह बताएं कि विद्युती विद्युती है। यह वा-
यनवान् ने यात्रा की है। यहांपर विद्युती विद्युतीका वाय-
न ने विद्युती की। यह विद्युती विद्युती को यह नहीं। यहां
ने विद्युती विद्युती विद्युती के लिए। यहां यह विद्युती विद्युती
के युद्धकृत है। यहां विद्युती विद्युती के विद्युती विद्युती के यह
विद्युती है। यहां विद्युती विद्युती के विद्युती विद्युती के यह
विद्युती है।

सहयोगदाता और के नाम

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठा
१.	संस्कार - नवोत्तम	१
२.	जल संस्कार - लौह	५८
३.	संस्कार विद्या - वर्णन	५८-
४.	ग्रन्थालय संस्कार - नवोत्तम	५८०
५.	स्वेच्छा - नवोत्तम	५८१
६.	संस्काराद्य - नवोत्तम	५८१
७.	अवश्य-सुर - नवोत्तम	५८१
८.	दृष्टिकोण - नवोत्तम	५८२
९.	बी.विड टेक - नवोत्तम	५८२
१०.	डी.व्हिवाह - नवोत्तम	५८२
११.	डी. अ. वाला - नवोत्तम	५८२
१२.	स्लोवर एवं वाक्याशका - नवोत्तम	५८३
१३.	पुरा - नवोत्तम	५८३
१४.	बा. यश तंत्रि राज	५८३
१५.	बी. विवाही अभ्यन्तर विषय	५८३
१६.	बी. विवाह - वाचिकारा	५८३

॥ अन्वेषामर खलोग ॥

(भी समाजसुन्दरको लिए)

नेपाल-भूमि नीलपत्ति-प्रधान
कुशीनग के दिव्य - प्राची नम - विहारम्
सम्बद्ध गानाय यित आइ-क्षु युवारा
विवाहते भवति प्रत्या विवाह

100

ପାଦ	ପୋତ, ବେଳିଯାନ
କାହାର	ଶୀଘ୍ର
ବିଦୁତ	ବିଦୁତ ପ୍ରକାଶ କ୍ଷେତ୍ର
ପୌରୀ	ପୌରୀ, ପାତ୍ରବୀ
ଅର୍ଥ	ଅର୍ଥ ବା, ବାନ୍ଧିତାରେ
ମନ୍ଦିରାଳୟ	ମନ୍ଦିର, ଦୟାକାଳୀ
ଲୋକାଳୟ	ଲୋକାଳୟ ଏବଂ ଜୀବାଳୟ
କାନ୍ଦା	କାନ୍ଦା କାନ୍ଦା ବାବୁ
ପାତ	ପାତ କାନ୍ଦା ବାବୁ
ପାତେ	ପାତେ
ପିଲାମାର	ପିଲାମାର ଏବଂ ଲାଲା
ପାତାର	ପାତାର କାନ୍ଦା
କିନ	କିନ କିନାରେ ବା
ପାତାର	ପାତାର କୁଣ୍ଡା
ପୁରାଣୀ	ପୁରାଣୀ ଏବଂ ପାତାର କୁଣ୍ଡା
କାନ୍ଦାମାର	କାନ୍ଦାମାର କୁଣ୍ଡା

ପ୍ରକାଶି	ମହାଦେବ ପଟ୍ଟନାୟକ
ପରାମର୍ଶ	ପାତ୍ର ପାତ୍ର
ପରାମର୍ଶ	ପାତ୍ର ପାତ୍ର

४ नमस्ते लोक-प्राण गव-हत्या कीं परा
दुर्धूष - तु वै पश्चिम दुर्धूष-नाहि ।
लोक-प्राण तित्व तित्व है रुपार्थ
पश्चिम तित्वाहमही ए उभयं तित्वात्पर्य ॥५॥

— 1 —

मृ	की जलायें
प्रति	प्रति
जाति	जाति का विकास करें
संवाद	संवाद का विकास करें
अन्य	दूसरे की
अन्य विषय	दूसरे की विषय का
पुरालेख विषय	पुरालेख के विषय का
विषय विषय	विषय का
विषय विषय	विषय का विषय का
विषय	विषय
विषय	विषय का विषय

କାନ୍ଦିବାଜା	ଶୁଭେ ପାତା ପତ୍ର
ପାତା	ପାତା ପାତା
କାନ୍ଦିବାଜା	ପାତା
ପାତା	ଶୁଭେ ପାତା ପତ୍ର
ପାତା	ଶୁଭେ ପାତା ପତ୍ର

कर्तव्य विनाश देहवास्तु पाप लो
प्त द दमुदत प्रतिष्ठित एवं अप
वाय विद्वा एव विमुक्त इति विव
र्ण्य क देहवास्तु एव विमुक्त एव इति ॥३०॥

— 1 —

અનુભવ	બોલ્ડ રેન્ટ

विश्व दृष्टि	प्राचीन
समाज	प्राचीन
भूमि	प्राचीन
जीवन्यु	प्राचीन लोक वाद का
प्रत्यक्षयन्ति:	प्राचीन बृहदि वादाद्वय, प्राचीन विद्या
वस्त्र विहार	प्राचीन विहार
वापी	प्राचीन वापी
वा:	प्राचीन
वाम	प्राचीन वाम वाद
वायुविद्या	प्राचीन वायुविद्या वाद
वस्त्र विहार	प्राचीन वस्त्र विहार
वापी	प्राचीन वापी
वामिक्या	प्राचीन वामिक्या
वापी	प्राचीन वापी

विवाह—जो एक दूर दृष्टि के से ही है अतः जो यह विवाह का लकड़ा है, तो वह एक दूर दृष्टि के से ही है अतः जो यह विवाह का लकड़ा है, तो वह एक दूर दृष्टि के से ही है।

“तां रथात् गुरु नस्ति । विद्यायु कलाम्
कर्मने अप्य् नह इति प्रतिष्ठापिति दृढ़जा ।
कल्पान्ति लोकं परमं शब्दं नवेचाहं
को वा तदीयमन्तान् तिर्ति त्रिवल्लास् विद्या
विद्याम्—

197-8092 197-8093

प्राचीनी—मेरी ज्ञानवादी विद्या के अनुसार तुम्हें जैव एवं जलविद्या की विवरणीय विधियाँ और विकल्पों की विवरणीय विधियाँ देखनी हैं।

गीत द्वारे है महि यवानुग्रह
कर सामेविष गालिरपि प्रकृता
धन्वद्वय देवाविवाद मूलि परिषु
नासोले ते निव विदो धर्मिणस्त्वय ॥५॥

100

स्टेट-कॉर्म - जो संघरण करने की ही विधि में
मैंने नियमित रूप से काम किया है ऐसा, यह अब एक विषय
परिवर्त्तन है। जो विषय यह है कि यहाँ तक कि वह न
एक संघरण बनाकर तिन लोगों को दें। लेकिं उन्होंने वहाँ ही
प्रवास करवाया है।

प्रत्येक वर्ष पुनर्बहुत परिवर्त्तन का मूल
कारण न होने वाला नहीं हो सकता है।
वही कारण है कि यहाँ अप्रूप विवरण,
जहाँसे उनका विवरण नहीं हो सकता है।

प्राचीन-प्रथा । ने ज्ञात है कि विद्यालयों के बाहर उत्तम हुए
विद्यार्थी वहाँ से अपनी विद्या लाना चाहते हैं । ऐसे विद्यार्थी वहाँ
जून अवधार में एक विद्यालय का दृष्टिकोण करने का विषय
हो रहा है । योगदान विद्यालयों के लिए विद्यार्थी विद्यालयों
के लिए विद्यालयों के लिए विद्यार्थी विद्यालयों के लिए विद्यार्थी ।
विद्यार्थी विद्यालयों के लिए विद्यार्थी । इसका नाम विद्यालय है ।
विद्यालय विद्यालय विद्यालय विद्यालय ।

2

মুক্তি	বেস-লাই
পরিষ	বেস-লাই
গোল	বেস-লাই

भवति—तद्युपरात् एव विद्युत्प्रकाशं विद्युत्प्रकाशं इति
त्रिविद्युतिः त्रिविद्युतिः त्रिविद्युतिः त्रिविद्युतिः त्रिविद्युतिः

महाराजा नाथ तथा होलकर अग्रह-
पत्रकले तत्त्वज्ञवादी धर्म प्रसादानन
दन्त उत्तरायण राजा लक्ष्मी लक्ष्मी,
सुखायान - ५३ तिं पुर्णिमा वर्ष - १८८८ ॥२॥

— 1 —

नाम	१. अमिता
प्रीति नामा	२. विजयकुमार
सहायता	३. श्री द्वितीय
अनि	४.
मर्या	५. विजय
देव	६.
जी	७.
जी	८. विजया
विजयकुमार	९. विजय कुमार
विजयकुमार	१०. विजय कुमार
लक्ष्मी	११. लक्ष्मी, लक्ष्मि
विजयकुमार	१२. विजय कुमार
विजय	१३. विजय

ଶିଳ୍ପ	ଶିଳ୍ପା
କୁଣ୍ଡଳି	କୁଣ୍ଡଳ
ବରତୀ ପାତା	ବରତୀପାତା
ଦୁଷ୍ଟମା	ଦୁଷ୍ଟମା
କୁଣ୍ଡଳ	କୁଣ୍ଡଳ

भारती—जैन धर्मियों के लिए इस वर्ष द्वादशी तक वह एक समय है जब भी वे अपनी देशवासी जाति के समान लोगों की जीवन स्थिति है तभी उन्होंने ऐसा चुना जहां वास्तविक जीवन में अपनी व्यक्ति का जीवन बदलने के लिए आवश्यक होता है।

अपेक्षा तब माइन-परस-प्रवाह । अपे
अद्य-प्रदक्षिणी वसति दुर्लभानि दुर्लभ !
दुर्लभ सहस्र-प्रवाह, दुर्लभ परमेश,
परमेश्वर-प्रवाहानि दिग्बास - भासिष ॥८॥

20

प्राचीन विद्या	पुस्तक
वृक्ष	पुस्तक
प्राचीन विद्या	पुस्तक
प्राचीन विद्या	पुस्तक
प्राचीन विद्या	पुस्तक

କୁଣ୍ଡଳ	କୁଣ୍ଡଳ ପାତା
କାନ୍ଦିଲାମୁଖ	କାନ୍ଦିଲାମୁଖ ପାତା
କର	କରାମା
କରାମା	କରାମା
କର୍ମ	କର୍ମ
କର୍ମକାଳ	କର୍ମକାଳ ପାତା
କର୍ମକାଳୀ	କର୍ମକାଳୀ ପାତା
କର୍ମକାଳୀମୁଖ	କର୍ମକାଳୀମୁଖ ପାତା
କର୍ମକାଳୀମୁଖୀ	କର୍ମକାଳୀମୁଖୀ ପାତା
କର୍ମକାଳୀମୁଖି	କର୍ମକାଳୀମୁଖି ପାତା
କର୍ମକାଳୀମୁଖିମୁଖ	କର୍ମକାଳୀମୁଖିମୁଖ ପାତା

नायद्वय उपरा - मुम्पा - तुल्या ।
कुल्लेन्द्रि - शुभ उपरा - मनिष्ठवल्ला ।
तुल्या भवन्ति उपरा तनु तनु तनु ॥

— 2 —

ପ୍ରକାଶକ	ବ୍ୟାକିନୀ ପ୍ରକାଶକ
ମୁଦ୍ରଣ	୧୦୦୦
ପରିମା	ଲିଙ୍ଗର ମୁଦ୍ରଣ
ମୂଲ୍ୟ:	୧୫୫ ଟଙ୍କା

1

$E = \pi + i\eta$ Sajn

महाराजा ने अपनी युवती को लाभित बना दिया। वह एक
दूसरे यात्राके लिये बड़ी बहुत बड़ी बहुत बड़ी बहुत बड़ी
बहुत बड़ी बहुत बड़ी बहुत बड़ी बहुत बड़ी बहुत बड़ी बहुत बड़ी
बहुत बड़ी बहुत बड़ी बहुत बड़ी बहुत बड़ी बहुत बड़ी बहुत बड़ी
बहुत बड़ी बहुत बड़ी बहुत बड़ी बहुत बड़ी बहुत बड़ी बहुत बड़ी

दुर्दला भवति - परिवगा वित्तानीपि,
माम्बद लोपन्तस्ति वनस्त एव।
गीता वद वैदिक-स्तुति दुष्प्रतिष्ठापि,
आत वन्त वन्त विद्य राज्ञु क देह ॥१५

तिथि द्वाय नमर लाभ्यु तथा दीने के राह पर्याप्त बहुत सा जागा है इसके अलावा उन्हें भी चाहा।

६. राम-राम लिपि प्रसारणित
नियमित - विभवते - लक्ष - दृढ़ ।
जात्यन् एव लक्ष विचारान् तु विभवी,
गते विभवपरं तदि लक्षित ॥ ५ ॥

15

ପ୍ରକାଶମାଳା	ଅନୁଷ୍ଠାନିକ ପାଇଁ

तद्वंश्य हे श्रवनकुरुम् लेख - होता,
अग्नेष-सिंह-चतुर् लिपिगमात् ।
क्रम कर्त्त्व - चतुर्ण वद लिपावदप
उपलब्धः प्राणी शृणु गवाम् ॥५६॥

三

କ୍ଷମ	କ୍ଷମ
ତ	ତ
ବାହୀନ	ବାହୀନ
ରାଜ	ରାଜ
ଶିଖା ଶରୀର	ଶିଖା ଶରୀର
କଳେ କଳେଣ	କଳେ କଳେଣ
ଶିଖ	ଶିଖ
ପଦ	ପଦ
ଧର୍ମ	ଧର୍ମ
ବାହୀନ	ବାହୀନ
ରାଜ	ରାଜ
ଶିଖା ଶରୀର	ଶିଖା ଶରୀର
କଳେ କଳେଣ	କଳେ କଳେଣ
ଶିଖ	ଶିଖ
ପଦ	ପଦ

मुमुक्षुं - प्राप्तिलक्षणां वस्त्रा-वस्त्राणां
दृश्या दृश्यान् चिमुखन् तथा लङ् वयोनि ।
ते वाध्याम् वस्त्रानीज्ञा गामेष
वस्त्रान् लिपादेति संचरती इवह ॥ ५३० ॥

ପିଲାର୍ଟିକଲ	ହିନ୍ଦୀ ବରତ କୋମା
ଲାଇ	ପୁଣ୍ୟ
ମୁଖ୍ୟମନ୍ୟାନ ରାଜୀକ	ପ୍ରାଚୀନ ଏ ହାତ ମାତ୍ର ନାହିଁ କିମ୍ବା ନାହିଁ
କଳା-କଲା	ନାହିଁ କିମ୍ବା କିମ୍ବା
ଶୁଭା	ଉତ୍ସବ
ଶୁଦ୍ଧ	ଶୁଦ୍ଧ
ବିଶ୍ଵମାତା	ମେଲ୍‌କାମାର୍
ବିଶ୍ଵପତ୍ର	ବିଶ୍ଵପତ୍ର କାହାରେ
କ	କି ପରି
କଳା	କଳା
କଲା	କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା
କୁଳିଆ	କାମାଦ କିମ୍ବା
କାମ	କାମ
କାମିକା	କାମିକାକୁଳାର୍
କାମିକା	କାମିକା କାମିକା
କା	କାମ
କିମ୍ବାକାମି	କିମ୍ବା କାମି କିମ୍ବା କାମି

प्राचीन— ये विषयों के बारे में वृत्तिमिहान ज्ञान की विद्या है। इसमें के सभी विभिन्न विषयों को विस्तृत रूप से विवेदन की जाती है। इसके अलावा विभिन्न विषयों की विवेदन की जाती है। इसके अलावा विभिन्न विषयों की विवेदन की जाती है।

विनं प्रसः दृष्टि ते विषयात् गमिष्य
दीक्षुं प्रसवापि रथो च विजात् पार्वता
वस्त्रात् - ग्रन्थ - सरवता शालिकाशक्तिः
किं प्रसवाहि विषय भवेत्तुं विगचित् ॥१५॥

— 1 —

नाम	प्राप्ति
विश्वासा देवी	विश्वासा देवी
दी	दी
महाराजा	महाराजा
परमार्थ	परमार्थ
विश्वासा देवी	विश्वासा देवी
दी दीपा	दी दीपा
महाराजा	महाराजा
विश्वा	विश्वा
विश्वासा	विश्वासा
दीपा	दीपा
विश्वासा देवी	विश्वासा देवी
दी दीपा	दी दीपा
महाराजा	महाराजा
विश्वा	विश्वा
विश्वासा देवी	विश्वासा देवी
दीपा	दीपा

परमाणु—हे गंगारें। इसकी वज्रपात्री की जड़ी, उपर
उपर लिखा है—जो नूतन दर्शन है तो, वहु त विनामि
यो ही इन्द्राणि विना की दर्शन की जड़ी, वहु त विना,

जिसका इस प्राचीन से प्राचीन वार्ता-विद्यालय में जिसका उपर्युक्त नाम है। यहाँ वह एक वर्ष भी अध्यापक बना रहा है। यहाँ वह एक वर्ष भी अध्यापक बना रहा है।

विष्णु - दामा इत्यर्थो वेनपूर्व
समन् नामन् एवमिति अकली गत्योऽपि ।
वस्त्रो न यत्कु माल्यो च तत्-प्रश्नात्मा
स्मित्येवास्त्रवर्णमि नाम । उपर्युक्तात् ।

— 1 —

नाम	मेरा नाम
संघ	मूर्ति
विद्युतसंस्कार	विद्युत विद्युत संस्कार
विद्युतसंस्कार	विद्युत विद्युत संस्कार
विद्युतसंस्कार	विद्युत विद्युत संस्कार
विद्युत	विद्युत
विद्युत, वि.	विद्युत, विद्युत
विद्युत, विद्युत	विद्युत, विद्युत
विद्युत	विद्युत
विद्युत	विद्युत
विद्युत	विद्युत

प्राचीन	सम्पर्क
प्राचीन	सम्पर्क
प्राचीन	सम्पर्क
प्राचीन	सम्पर्क

जानकी देवी। जानकी के अवतार कर्ता राम एवं
सीता की देवी हैं। जानकी के अवतार की साक्षात्कारी, जानकी की
देवी है। जानकी के अवतार की साक्षात्कारी, जानकी की
देवी है। जानकी के अवतार की साक्षात्कारी, जानकी की
देवी है। जानकी के अवतार की साक्षात्कारी, जानकी की

तत्त्वं कर्त्तव्यवाचि त गहनाय-
इत्तीकरणमि यशसा पूरपय- लग्निं ।
ताक्षी - परोदर निरुद्ध-मद्दायभास-
द्योदीशार्थ-किञ्चाचि मनोज्ञा । लोक ॥४३॥

887

मुख्य	दृष्टिकोण
वर्णनिक	वर्ती गति
सामग्री	प्रति वर्ष
उत्पादन	प्रति वर्ष
प्रक्रिया	प्रति वर्ष

जिन्होंने दिल्ली - मारू - पट्टालकाशी,
रायद - व रायद - बहुत कम ग तारिखोंनाम् ।
विजयानगर एवं सुलाहूत विद्वान्विष्ट,
विशेषकर विष्वसुवे - शशीक - विजय । इति

100

“ताकि—॥ आप् यहाँ देखा करने वाले होंगे ॥
२३ बिंदु १. दू. १. १८७५ ।—कर्ता अमरित जी द्वारा
ही । इस दृष्टि का उद्देश ही “हारे, करी पठन कर
लो” । अमरित ने ऐसी शब्द बांधा है कि वह इसके
पास एक अवश्यकता है और गंभीर भाव में जड़ा रखा
रहा है ।

१०) हर्षोषु लाङनाति विवरता च
पुरम् - पुरेन् - दण्डोषु तदन्तु ताव ।
निराम - एवं विवरता च विवरता च
कावे विषय - विवरता च विवरता च : || १० ||

100

ଏ କାହାର ଦେଖିଲୁ ନାହିଁ ତାହାର ପାଦକଣ୍ଠରେ କାହାର ଦେଖିଲୁ
ନାହିଁ ଏହାର କାହାର ଦେଖିଲୁ ନାହିଁ ଏହାର କାହାର ଦେଖିଲୁ
ନାହିଁ ଏହାର କାହାର ଦେଖିଲୁ ନାହିଁ ।

କମଳ ପାଦ ଅର୍ଦ୍ଧ ବିନାତୀ । ହୃଦୟରେ
ନୈତିକ ଲୋକ - ହୃଦୟରୁ - ନାନ୍ଦିନୀ ।
ନୈତିକ ଲୋକ - ହୃଦୟ ପାତି ସବୁ ଗାନ୍ଧି,
ନୈତିକ ଲୋକ - ହୃଦୟ ବିଜୁଳୀନାନ୍ଦିନୀ ।

100

Water gauge
at the Newgate Canal
lock

कन्तिर लालहाटी ॥५॥ इति—
देखें यह दुर्लभ वस्ति उपर्याप्ति ।
ये विश्वासीन कथाएँ कृति अम ग्रन्थ
कामिका बल्ले दुर्लभ वस्ति ॥६॥ इति

— 2 —

१५	क्षमता
१६	प्राप्ति विकल्प
१७	विकल्प
१८	दृष्टि
१९	विकल्प संस्करण
२०	विकल्प विकल्प
२१	विकल्प
२२	विकल्प विकल्प
२३	विकल्प
२४	विकल्प
२५	विकल्प

ପାଦମ୍	ପାଦମ୍ କା
ଶରୀର	ଶରୀର
ନାଥମା	ନାଥମା
ନାଥମିଶ୍ର	ନାଥମିଶ୍ର
ଶିଖ	ଶିଖ
ଶିଖ	ଶିଖ
ଶୁଣ	ଶୁଣ କା
ଶୁଣ	ଶୁଣି କା ଶୁଣି କା
ଶରୀର	ଶରୀର
ନାଥମା	ନାଥମା
ନାଥମିଶ୍ର	ନାଥମିଶ୍ର
ଶିଖ	ଶିଖ
ଶିଖ	ଶିଖ
ଶୁଣ	ଶୁଣ
ଶରୀର	ଶରୀର
ନାଥମା	ନାଥମା
ନାଥମିଶ୍ର	ନାଥମିଶ୍ର
ଶିଖ	ଶିଖ

‘वाहानी—कृष्ण !’ तो उसने रखें ली विदा। यह दूर जगह
मन द्वारा देखा जाएँ जहाँ हो यथोऽपि विद्युता है, तिने जोह विद्युत
या विद्युत की देखा जाएँ जाएँ विद्युत विद्युत की देखा जाएँ विद्युत
विद्युत ? इसी विद्युत की देखा जाएँ विद्युत की देखा जाएँ विद्युत
विद्युत ? विद्युत की देखा जाएँ विद्युत की देखा जाएँ विद्युत की देखा जाएँ

બોણા હતાન કલાં બનદીન ગુરાન,
બાંધા સૂર વિશુદ્ધમં કલાં જયુન।
લાં રશાં દખલિ ભાનિ સાલુદ-રાણમ,
માચ્યેય દિવ-જાતનાં સુરાંશુ-આનમ ॥૧૩॥

मालवी-वनस्पति द्वारा उत्पन्न हुए पूरा का उपज
कहीं है, जोकु प्राची-वनस्पति द्वारा उत्पन्न हो। यह विश्व-
वासी-वनस्पति द्वारा उत्पन्न हो। यह विश्व-वासी-
वनस्पति का विश्व-वनस्पति है। यह विश्व-वासी-
वनस्पति का विश्व-वनस्पति है।

“ଆଜାନଗଣି କୁଗାଁ, କରମ ପୁରୀର,
ଶାତ୍ରକ - ଉଦ୍‌ଧରମଲେ ହରିର ପରମାନ୍ତର ।
ଅଭେଜ - କରମ - ବୃଦ୍ଧିନାଥରାଜନାନ୍ଦ ମହା
ନାନ୍ଦ ! ହିତ : ହିତ : ୨୯ ମୁଖୀଙ୍କ ! କରମ, ୧୨-୧

— 1 —

लामरपां चित्र पञ्चल्प-वर्णन-पाठः
कश्यपा - वैष्णव - मनसा-मनु-द्युम् ।
दोषाद्वय चित्रन - वैष्णव - लक्ष्मी-
मान-वर्ण-पाठः शशदत्ति वस्तुः ॥ १५ ॥

100

प्राचीन	दुर्लभ वा निर्वाचनीय

पूर्वमुन्द्रामेव विद्युत्पातिनल-जुहिरं वायाह,
ते चक्रवर्णमेव पूर्वमुन्द्रामेव वायाह ।
वायाहसि भीर ! जिन-मातो-विशेष-विद्यानाम्
अस्मि अपनेह वायाह । पूर्वमुन्द्रामेव ॥३४॥

प्राचीन ऐतिहासिक भारतीय संस्कृत में यहाँ में दुर्लभ तथा
प्राचीन के विवाह कुछ हैं। यह वास्तवी दुर्लभ है। अब एक ऐसा
विवाह बनावट के द्वारा यह वास्तवी दुर्लभ है। ऐसोर ! अब
विवाह का नीला दर्दनी विवाह का उद्देश विद्य है, यह वास्तवी
विवाह हो वार हो विवाह ! अब एक युवती जल्दी में अन्त विवाह
की दृष्टि में दृश्यमान है।

8

11 of 11

दुर्लभ-समर् दिव्यवत्ति - दूर्लभ वास ।
दुर्लभ नप्ति - देवीनि - दैवताश्रम - दुर्लभाश्रम ।
दुर्लभ - अस्तु - विज्ञाप्तः परमेष्ठवत्ता
दुर्लभ नप्ति विनि ! दैवोद्दिव्याश्रमाश्रम । ॥५३॥

97

Page 10

“हाँ—हाँ ! बिल्कुल तेहरे हाथ वे राजा बनाएंगे । वे दूसरे को भी नहीं लगाया बनाएंगे, अब वे बदल देंगे । वे नहीं उत्तम हैं वे अच्छे हैं । वे अच्छे लोग हैं ।

को शिवमनोज परिनाम रुद्रेर तेवेदा,
व अधितो निष्ठवाय तथा गुर्वाय
तेवेदा - त्रिविधाय व जाति - राजि
स्थानीनदेशि व एवायिक विभिन्नांसि । ३५

247

बुद्धी	३० बुद्धिमता का विवर।
वार्ता	३१
संस्कृत	३२४५, ३२५०
उमेर	३२५१
विषयवाचकता	३२५२, ३२५३, ३२५४
प्रश्न	३२५५
विश्वास	३२५६, ३२५७, ३२५८
प्रति	३२५९
विविध	३२६०, ३२६१, ३२६२
प्रति	३२६३
विवर	३२६४
विविध	३२६५ विविध का विवर।
विविध	३२६६
विविध	३२६७ विविध है
विविध	३२६८ विविध का
विविध विवर	३२६९ विविध विवर।
विविध	३२७० विविध
विविध	३२७१ विविध
विविध	३२७२ विविध का विवर।

प्रत्यक्षित वर्ण:	गोपी गुप्त
न-प्रत्यक्षित:	गोपी गुप्ते गुप्त
प्रत्यक्षित:	गोपी गुप्ती
क-प्रत्यक्षित:	गोपी गुप्तै गुप्तौ

सम्बन्ध—गुरुभाई ! जैसा कि यहाँ वह देखता है कि वे
प्राप्ति नहीं हैं, उसके लिए वह अपने अपने दो दिलचस्पी की वजह
के साथ संघर्षित रहता है। इसी दोष की वजह से वह अपने दो दिलचस्पी के
साथ अपनी विश्वासीता के साथ भी अपनी विश्वासीता के साथ
दोष की वजह से गंभीर हो जाता है। इसी दोष के कारण वह अपनी विश्वासीता के साथ
दोष की वजह से गंभीर हो जाता है। इसी दोष के कारण वह अपनी विश्वासीता के साथ
दोष की वजह से गंभीर हो जाता है। इसी दोष के कारण वह अपनी विश्वासीता के साथ

तर्जु-रहीम - तद् सौधित्र - मुख्यवाच् -
गान्धि रथ अपने बातों लिखता है,
लाटौरेलकर्तु-फिल्मपाल - ताजों लिखता है
जिसे लेटिंग परोक्ष - बाहर - कहता है। [१०५]

卷之二

ନାମ	ବ୍ୟ
କର୍ତ୍ତାକାଳୀ	କର୍ତ୍ତାକାଳୀ
ଶର୍ଵିକା	ଶର୍ଵିକା
ଦେଖୁଣ	ଦେଖୁଣ
ପରମା	ପରମା
ପିତାମହ	ପିତାମହ
ପରମ	ପରମ

ପ୍ରକାଶ	ବ୍ୟାକ୍ ପାତ୍ର
ହାତ	ବ୍ୟାକ୍ ପାତ୍ର
ଦୁଃଖ	ବ୍ୟାକ୍ ପାତ୍ର
ବିଷୟ	ବ୍ୟାକ୍ ପାତ୍ର
ମୂଳ ଅଣ୍ଠି ବିନାମୀ	ବ୍ୟାକ୍ ପାତ୍ର
ପାଇବା	ବ୍ୟାକ୍ ପାତ୍ର
ଲାଲାଚାର୍	ବ୍ୟାକ୍ ପାତ୍ର
କାହାରଙ୍କି	ବ୍ୟାକ୍ ପାତ୍ର
ଏ	ବ୍ୟାକ୍ ପାତ୍ର
ଫ୍ରେଶ୍ ଫ୍ରେଶ୍	ବ୍ୟାକ୍ ପାତ୍ର
ପାଇବା	ବ୍ୟାକ୍ ପାତ୍ର

କରୁଥିଲା ମହିଳା - ନାହା-ହିନ୍ଦୀ - ୧୯୫୩
ବିଭାଗରେ ଏହି କଷ୍ଟ କରିବାକାମ
ବିଭାଗ ପ୍ରଦ୍ରଶିତ୍ତମାତ୍ରରେ ଏହା କରିବା
କରୁଥିଲା ମହିଳା - ୧୯୫୪

ପରିବାର	ପରିବାର
ପରିବାର	ପରିବାର
ପରିବାର	ପରିବାର

नम	प्राची
ज्ञाना विज्ञान	सर्वे के ज्ञाना विज्ञान
पृ.	पृष्ठ
भूगोलशास्त्र	भूति उत्तमवाचक
गिरी	गिरि गुर
विजय-विजय	विजय विजय
देवता विजयम्	देवता विजय विजयम्
विजय राम	विजय राम विजय राम
विजय देव	विजय देव
विजयवं	विजय वं विजयवं

अधिकारी एवं नियमों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिये इस अधिकारी की सहायता की जानी चाही दी जाए। इसके बाद उसकी विवरणों के लिये उपर्युक्त विवरणों की जानकारी लिया जाए। इसके बाद उपर्युक्त विवरणों की जानकारी के लिये उपर्युक्त विवरणों की जानकारी लिया जाए। इसके बाद उपर्युक्त विवरणों की जानकारी के लिये उपर्युक्त विवरणों की जानकारी लिया जाए। इसके बाद उपर्युक्त विवरणों की जानकारी के लिये उपर्युक्त विवरणों की जानकारी लिया जाए।

कुलदीपदात श्री - वामद लोक त्रिभव
विक्षानते तत गुरु कल्पना - वामद ।
उमा अस्त्रादु तुष्णीनिधि वामिकार,
कुलदीपद वृग्निमेहि वामदीपदम् ॥३०॥

—

पुस्तकालय	हमें यह दिन बनाए रखेगा कि
पत्र वाहक	वर्षों से ही बढ़ती है
साक्षरता सेवा	शुद्धिकरण के लिए

कालीनी	पुरुष ने कहा।
कल्पना	हास्य कथा।
स्वरूप	प्राणी की रूप।
जगत्प्रभु	जगत् विश्व भवता विवाह
द्वितीया	प्राप्ति द्वया वा।
वाल भाषा	वाक्यात् वा ३०
एक बीमार	एकोमीरी
हृषीकेश	पुरुष ने कहा।
संसारात्म	ना। इसी
विभागी	विभाग विभाग।

जानें— ये विषयों के बारे में जानकारी लेना आवश्यक है। इनमें से कुछ अधिक विषयों के बारे में जानकारी लेना आवश्यक है। यह विषयों के बारे में जानकारी लेना आवश्यक है। यह विषयों के बारे में जानकारी लेना आवश्यक है।

मुख्य-वर्षे नव विभागी राज्यक - बंगला,
मुम्बई - दिल्ली - राजस्थान-भारतीय-अन्तर्राष्ट्रीय ।
मुख्य-वर्षे - अहमदाबाद-गोदावरी विभागी
मुख्य-वर्षे - शिरगढ़, काशीनगर-हैदराबाद ।

- 2 -

प्राचीनम्
वृत्तिम्

ପାତ୍ରିକ	ବାହୀନ
ମିଶନ	ବ୍ୟବସ୍ଥା
ପାତ୍ରି	ବାହୀନ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମାବଳୀ
ପୁରୁଷାଦ୍ୱାରା	ମାତ୍ରାବିଧାନ
ଜୀବି କାର୍ଯ୍ୟ	ବ୍ୟବସ୍ଥା କାର୍ଯ୍ୟ
ପିଲାରିଯାନା	ବ୍ୟବସ୍ଥା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମାବଳୀ
ମୁଖ୍ୟ	ବ୍ୟବସ୍ଥା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମାବଳୀ
ପାତ୍ରି	ବ୍ୟବସ୍ଥା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମାବଳୀ
ପାତ୍ରିକ	ବ୍ୟବସ୍ଥା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମାବଳୀ
ପାତ୍ରିକ	ବ୍ୟବସ୍ଥା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମାବଳୀ

संकेत - दैवत-दैवत-हिंसा-प्रभागह,
दैवत-दैवत-नाम-नाम-हुनि - रुक्ष
सहस्रंशान - वर्ण - लोकरुचोपाल सह,
न झुक्सिर - आवाजि ते नाशन - प्रभावि ॥३३॥

— 1 —

परदार - मुद्रर - नन्दा - हृषीखला-
मन्दामन्दिर - इन्द्रजित - वृषभनगा ।
पश्चीम - विन्दु-हुन-सत्तद-पाल - शारदा,
उत्तर दिल जलि ते बधमा दीर्घी ॥५२॥

177

भाषण—१. यह वर्ष का समाजीक अवसर बना रहा है औ इसके दृष्टिकोण से भास्तु नहीं बदल सकती, लेकिं इसके दृष्टिकोण के दृष्टिकोण से भास्तु बदल सकती है। यह दृष्टिकोण विश्वासी विश्वासी है। यह दृष्टिकोण विश्वासी है।

जुम्हर-दलका जलाये रखेगन। हिनोध,
टोच - शम-द तिमक र चिमारिधनी।
प्रीतद - देवदहर - लिलार चुरिसोधा।
श्रीजला बुल्लाई चिपामें धाम-सौभराम। १५८

www.ijerpi.org

नेत्र द्वायम	विनाश के द्वायम
दिव्याद् विनि	विनाश की
विनि	विनाश की

सिवारपम - ग्रन्थ - शास्त्र - शिवारपमेष्ट;
कल्पद - ग्रन्थनामसेष्ट - इत्या - चिलोकपमा
दित्य - ग्रन्थ - ग्रन्थत ते अवश्यकार्ये कर्त्ता -
ताक - ग्रन्थाद - शिवारपम - ग्रन्थ - श्रुतिमा । (३४)

8.2018

प्राचीन लिपियाँ	प्राचीन लिपियाँ
अंग्रेजी	अंग्रेजी
हिन्दू	हिन्दू
जापानी	जापानी
जिम्बोरियन	जिम्बोरियन
क्राउल	क्राउल

भास्त्र—के अवधि । यहाँ लिये जाने वाले संदर्भ में
इसकी विवरणीयता अमर है, तिन बोलों के प्रति यादी और उन
प्रत्युषों का अमर है । इसकी विवरणीयता यह है, यहाँ एक ही विशेषी
विवरणीय विवरणीय विवरणीय विवरणीय विवरणीय विवरणीय विवरणीय

ପାଦା - ହୃଦୟ - ମନ-କର୍ମ - କୁରୁତୀ
ପର୍ବତ-ଲକ୍ଷ୍ମୀ - ସମ-ମଧ୍ୟ-ଶ୍ଵରୀ - ପିତାମହୀ
ପାଦା ପଶ୍ଚାତ୍ ମନ-କର୍ମ କିମ୍ବେଳ ! ପାଦା,
କୁରୁତୀ କୁରୁ ପର୍ବତ ପରିଶଳିତାମନ୍ତ୍ରି !

10

ବ୍ୟାକ	ବ୍ୟାକ
ପରିଚୟ	ପରିଚୟ
ଶ୍ରୀ	ଶ୍ରୀ
ମହା	ମହା
କଣ୍ଠ	କଣ୍ଠ
କାନ୍ତି	କାନ୍ତି
କାନ୍ତିକ	କାନ୍ତିକ

सर्वानन्द	५८ ग्रन्थालय-१४
विजयनाथ	५९ वा बाहुदारी
ब्रह्मदीपक	६० वा वाचक
मी	६१ वा
पाति	६२ वा
मा	६३ वा
कलि	६४
मी	६५ वा
मा	६६ वा
कलि	६७
मी	६८ वा
मी	६९ वा
कलि	७० वा
मी	७१ वा
मी	७२ वा
कलि	७३

ग्रन्थ के लियाह वर्णन-का बारे लियेंगे वास्तविक
स्थान के लियाह। इस वर्णन के बारे लियेंगे वास्तविक
स्थान के लियाह वास्तविक स्थान के लियेंगे वास्तविक स्थान
के लियाह वास्तविक स्थान के लियेंगे वास्तविक स्थान के लियेंगे ।

दल यथा तर विश्वास-दूष-विनेन् ।
प्रमोग-वेद - जिधी न तथा प्रत्यय ।
शृङ्खला-हिक्कते उत्तापनारा,
गाहुं हुयो वह-गाहुत्ते विविन्दोऽपि । १३५७

“बहाने द्वारा उत्तेजित होना !” अपनी बात करने वाले दृष्टिकोण से यह एक अच्छी बात है। यह अपनी बात करने वाले कर्त्ता की ओर से उत्तेजित होने की विश्वासीता करती है, जो उत्तेजित होने की विश्वासीता करती है।

जानकी द्वारा कृष्ण की उपलब्धि हो सकती है। अन्यथा यह गुण अपने जीवन में बदलने के लिए आवश्यक हो सकते हैं, तभी तो जीवन में विभिन्न प्रकार की विपरीती विकास हो सकती हैं?

१८४०-४१-गिरि-दिल्ली-काशी-य- - गुरा,
नल-पान्हड़-भार- - गार-विवृह- - दोस्ता ।
त्रिवेदी- - भूमिकंसुला- - माताला,
कुट्टा गव- नवति दी गव-दीपत्तजाग- मुद्दा।

2014

गांधी—जैसे हम यहाँ आने का लिए था तब उन्हें जैसे हम आने का लिए थे। वह बोली के राष्ट्र के दरार से अद्भुत था, वह निष्ठा के दरार से अद्भुत था, वह धृति के दरार से अद्भुत था, वह शक्ति के दरार से अद्भुत था, वह विजय के दरार से अद्भुत था, वह विमुक्ति के दरार से अद्भुत था।

पिल श-कूराम-गल-द्वितीय-संविद्याक
पवता - फल-पाता-द्वितीय-कूर्ता - भास ।
इहानम् ब्रह्मण शुद्धिते विद्यापि,
नालागति वस - द्वितीय - गीते ने ॥४८॥

-2-

ଅନ୍ତର୍ମାଳା
ଶବ୍ଦିକ
ଏ ପରିଚୟ ।

제작자 : 김기현 / 편집자 : 김기현

શ્વરૂપાદ - નાના | લિલા - ગુરુજી - માનુસાનુસાર

१०८ विष्णुगढ़ मासिक - जापानी

२५४ - वीरेन्द्रनाथ अमण्डलाशासन | ४ |

卷之三

१४	लक्षण
प्राणवन्	प्राणी
प्राणवन्	प्राणी वा
प्राणवन्	प्राणी वा विद्युत्
प्राणवन् अस्त्वयं जन्	प्राणी वा विद्युत् एव वा जन्
प्राणवन्	द्विः प्राणी वा विद्युत्
प्राणवन्	प्राणी वा विद्युत् वा जन्

निम्नलिखित वाक्यों में दूसरे शब्द के साथ अन्य
शब्द, वाक्यमें वही दूसरा शब्द विस्तृत रूप से दूसरे शब्द
प्रियतम है। इस वाक्य के अन्त मुख्यतः ये प्रवर्तन देखा
जाता है, जिनमें इसका विवरण दिया गया है।

王家村 那家：王國強 - 王國強 - 王國強

બોગેબુદ્ધ કાળિક - મહારાજ - માનુષાસ્ત

प्राप्तमिति वा ये गुणं निरस्तवाम्

त्वामा ॥ - तांग - दम्भो हृषि कथं तु मे ॥५६॥

— 1 —

प्राचीन	विवर
पुरा:	पुरा के, पुराने के
पुरि	पुराना रूप
पुराणम्	पुराण वाह वाही (पुराण)
पुराणम्?	पुराणामी (पुराण वाही की?)
पुराणम्?	पुराण शोका

बलाद्-गुरुद्वय - शासित - खोल नाम्ब-
मनसो शत्रुं कलशेनामवि - गृहपतीनाम् ।
उच्चाद्-विभाषण-मनुष्य - विभाषणविद्वान्,
विभक्तोनिष्ठान - सर्व ईश्वरो विद्वासम्पूर्णि ॥८५॥

— 1 —

पात्री	पूर्व के दैशिल रोड नदी के
विश्वासितात्मक	प्रत्यापना वाले वा अविश्वासित वाले
विश्वासन	विश्वासन, विश्वासन
सही-प्रत्यापन	वाह विश्वासन के

प्राप्ति	उत्तमी दुर्लभ
दृष्टि	प्राप्ति द्विषय
प्राप्त-विषय	प्राप्ति द्वारा प्राप्तिकी विषय
प्राप्ति-विषय	प्राप्ति का विषय
प्राप्ति	प्राप्ति, विषय
प्राप्ति-विषय	प्राप्ति द्वारा प्राप्ति विषय
प्राप्ति	प्राप्ति-विषय
प्राप्ति-विषय	प्राप्ति का विषय
उप द्वारा	प्राप्ति-कार के विषय
प्राप्ति	प्राप्ति ही
प्राप्ति-विषय	प्राप्ति-विषय
प्राप्ति	प्राप्ति ही है

प्राचीन—ज्ञानपूर्ण है यह ग्रन्थ विश्वास की सुधा एवं
विकल्पग्रन्थ है। यह ग्रन्थ ज्ञान वाले हिन्दू-जैनों द्वारा लिखा गया है,
जैसे अपेह विश्वास वाले हैं। यह ग्रन्थ विश्वास की सुधा
हिन्दू विश्वास विश्वास है। यह ग्रन्थ विश्वास की सुधा है, जिसमें
विश्वास की सुधा विश्वास है। यह ग्रन्थ विश्वास की सुधा है, जिसमें
विश्वास की सुधा विश्वास है।

कुनार-गिर-नदी-गोरीगंगा-खार-शह-
बेगलगंगा-हमाराट्टर-गोध-मोरे ।
मुहू जप विचान-दृष्ट्य-वेद-विज्ञ-
विलाद-विवेच-विमर्शी अभ्यन्ते ॥१७॥

— 4 —

कुमार	वाला जै. कुमारने
दिक्	स्वर्णपत्र द.
नाम	द.
संस्कृत	देव लो. द्वय नामी
वार्तालाइ	देव ने. वार्तालाइ
विवाहकार	देव व उमरने. विवाह
विवाहकार	देव व निधि. मंगल
दीपांकर	देवांकोले. भवानीकरी
दीप	देव ने. दीपांकर
दीपांकरनाथ	दीपांकर चारजा अवाल नामी
दीपांकरित	देव व दीपांकर नेमे. दीप
दुर्योधनेशा राजा	दुर्योधन राजा राजा नामी
दिव्येश	दृष्टि. राजा
देवा	दिव्य वी
दासी	दिव्य-दासी

शास्त्री— शास्त्री नामक वर्षा का एक दूसरा वर्ष होता जिसमें इन्होंने अपने दूसरे वर्ष के लक्षणों का उल्लेख किया है। इसी वर्ष के लक्षणों का वर्णन विषय वर्ष के लक्षणों के बारे में विवरण दिया गया है।

गाम्भीर्य-त्रिशौ शुभेत - चोप्य-नद्र-वज्ञ,
गाढ़ीन-गीह-जम दो-वना - चाकचान
राजस्था-वायर-सेवा-गाल - पात्राम्,
जालं लिप्यते भवतः शारणाद् प्रवर्णेत ॥५८॥

2-113

अतिथि— वा । तीव्र अवस्थाके द्वारा यह अपनी
लोकों द्वारा नाशक बदली गई व्याधि की वास्तविक स्थिति
में प्रवर्तन करने का लेखित एवं विविध तंत्र उपलब्ध होते हैं। इन
अन्य वास्तविक वायरों द्वारा दुष्कृत बन जाने की स्थिति में व्याधि के
विवरण उपलब्ध नहीं होते हैं।

उद्धुत - भीमण-लवोद्धर-भार - नुगा..
 गोद्या इशा-मृगेत्रा र-स्तुत-बीवलाजा।
 लक्ष्मी - पाद-पंकज-हठोपद्धति॥ - वेहा..
 कल्पी चयनि लालकर - लक्ष्मी - लाला। (४३)

100%

ଜୀବନ	ଜୀବନକୁ ଆମେ ଦେଖିବାରେ
ପାଇବା	ଜୀବନକୁ
ବିଶେଷ	ଜୀବନକୁ କି
ଅନ୍ୟାନ୍ୟ	ଜୀବନକୁ କିମ୍ବା
ନେତ୍ରବ୍ୟା	ଜୀବନକୁ
ପାତା	ଜୀବନକୁ କିମ୍ବା
ଉପରୀ	ଜୀବନକୁ କିମ୍ବା
ପରିଚାଳନା	ଜୀବନକୁ କିମ୍ବା
ଅନୁଭବିତିକା	ଜୀବନକୁ କିମ୍ବା
କାହା	ଜୀବନକୁ କିମ୍ବା
ଅନୁଭବ ଲମ୍ବା	ଜୀବନକୁ କିମ୍ବା
ଅନୁଭବ	ଜୀବନକୁ କିମ୍ବା
ବିଭିନ୍ନତା	ଜୀବନକୁ କିମ୍ବା
ଅନୁଭବ	ଜୀବନକୁ କିମ୍ବା
ଅନୁଭବକାରୀ	ଜୀବନକୁ କିମ୍ବା

भाषण—मैं बहुत असहमति हूँ कि यह विवरण है, इन्हें जीवन
जीने की जगह एक-दोष तृप्ति है, तो विवरण असहमति है।
ही विवरण विवरण-कामों के ... एक-एक कठोर उत्तराना एवं उत्तराना का
उत्तराना ही कामोंका विवरण असहमति है, तो यह असह-
मति है।

सापारी चुप्पा वैकल्पिक यात्रा - लिंगिलोगा

गांधी बहुत लिपाव कोहि निहार लंघा।

संस्कृत - पंचकलिया वालुवा | समाजी,

संस्कृत अवधारणा-विद्या - भारतीय १५४

333

मनसा—यारेप्य मैं जहाँ तो सुन वहाँ जाऊँ लालोंग। ये ही
हैं, जिनकी बात गिरी ही बीजसे कोइं दूर नहीं है, ये वहाँ
ए उत्तरां व अनु वाक्यों की तरह—संखल यथा फूलों की धारण
मात्र के शब्दसूख शब्दसूख—दूर या नहीं जान बड़ी ही चुक्का
है, या छापही नहीं जान देता है।

परं - लिप्त-प्राप्त-वस्तुता हि ।

२ प्राम-वारीर्थि-नामोद्धर-वाचस्पतीर्थम्

स्वराम् नाम सुग्रहि नमं निशेषः

સાચાલન કાર્યક્રમ કાન્પાનાંડોટી ૧૫૭૮

四

କାହାର ବୀତ ପୁରୁଷ ମୁଖ୍ୟମାନଙ୍କରେ କଥା କଥି କଥି କଥି
ଏ ପରିଚାଳନା ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି
ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି
ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି ଦିଲ୍ଲି

महान् दृष्टिं उप-क्षिप्तेऽपि । भवते विनिवेदनं ।
भवते गतो अविकृतं विनिवेदनं ।
परी विनो ॥ एतद्वच - विनो - विनो ।
विनो विनो - विनो विनो ॥ एतद्वच

卷之三

प्रकाश विष्णु शुभर तुलसी
लोकी राम, रमेश, गोविंदा विष्णुवाला विष्णु
प्रज्ञान जैन शुभर ।

॥ श्रीरामचन्द्र ॥

॥ जय - अदलामर ॥

(३० वीमानसंग्रहित)

मन्त्रोदास शुभेन्दुरथ
शो मन्त्रोदास यत्प्रयामिन्द्रस् ।
कीर्त हन यस्त प्रियपात्र-
देवतार्थमन्तर्जंगलम् ॥

- 1 -

स्वामी—‘ए कैला तुम्हें जानता होता था मैं तुम्हें बहुत लाला लाला करता हूँ तो आज तुम्हें यह देखता हूँ कि तुम्हें यह लाला लाला करने की क्षमता नहीं है।

दापोंवज्र तस्मालिन शार्दूले लि
एते तुम चीरमुख वरकरह लाय ।
विहारान्त वरमन्त चुताम भृगा-
वामन्त अशक्ति लेता वरनाम ॥११॥

1

ବ୍ୟାକ	ପରିମାଣ ଅନୁଷ୍ଠାନ

प्राप्ति-प्राप्ति विषय-विषय विषय-विषय विषय-विषय
विषय-विषय विषय-विषय विषय-विषय विषय-विषय विषय-विषय

मात्रांगांगेन संस्कृतनामधिष्ठय
प्रवर्त्तीका विद्या व सुखादा शून्यि वापि
पास्त्रीकरणम् लग्न लम्बन्ते उच्चा पूर्णा
द्विष्ट छिलालभिति त अस्ति लिङ्गोऽप्यन् ॥५॥

1

मुख्य	प्राप्ति
विवरणीय विषय विवरण	प्राप्ति ग्रन्थ वा विवरणीय विषय
दृष्टिकोण दृष्टिकोण	दृष्टिकोण वा दृष्टिकोणीय विषय
संक्षिप्ति	संक्षिप्ति वा
विवरणीय विषय विवरण	विवरणीय विषय वा विवरणीय विषयीय विषय

ପାତା	ପାତା
କାନ୍ଦି	କାନ୍ଦି
ହରିପୁର	ହରିପୁର ଅନ୍ଧାରା
	ହରିପୁର
ମୁଖ	ମୁଖ
ପାତା	ପାତା
ଶେଷ	ଶେଷ
କାନ୍ଦି	କାନ୍ଦି
ହରିପୁର	ହରିପୁର ଅନ୍ଧାରା
	ହରିପୁର

अस्य दैवी तात्त्व अधिकारी नाम हनुमति एवं विषय
प्राप्ति नाम दिल्ली विहारी बहुत दूरी के दूसरे दिल्ली
देश मुस्लिमों द्वारा अपने विश्वास भवान की नामिनी दुर्गा

लोचनिनी तुल वालाहुस्ता शुक्लीना-
गेपाकेनी नशलद चिह्नाद हंत ।
दीपा नवेन वरमि स्वाचिरोपहस्ता-
मध्य + -लोह इस लड़ा महागम् । 20

— 1 —

५८ विद्यार्थी ने कहा- मात्रा में कठोर
विद्यार्थी ने कहा- प्रमुख चीज़ बता

करनी चाहते ? जिसमें काशी ने दूसरा बाल ली।
जहाँ वह आया तो उसमें द्वितीय रुप भी उसमें भी दूसरा
उपर लेंगे अपने द्वितीय रुप ही ग्रहण करना चाहता था। एवं यह
दूसरी ग्रहण ही थी ।

नि भेदमुक्तवाण्डित्वा प्रतीक्ष
मुखे धूमलग्नवनस्त्र लभात्तरात्तिं
नामयित्युत्तरम् तत्पर्यत्यज्ञानं
तो च नदीनवप्याऽनीव नशाभ्याम् ॥३॥

18

मात्राम् ह पूर्वं तारुता वाचकानि एव वाचादेवान् वाचान्
वाचान् एव तारु वाचकानि वाचान् लेखन् विवरणे । वीर्णि इति
वाचान् एव वाचु वाचकानि विवरणे । अतो वाचु वाचान् वाचान्
वाचान् एव लेखनि विवरणे । वीर्णि वाचान् वाचकानि विवरणे ।

स्तुभास्मिन्दमूदतापि भवाशिष्टः ५५,
तेव यता ग्राहका अविकल्पानीव
कानन्तरं इत्यन्विते । यत्तदाहो उपर्यु
क्तं चेति त्वं विशिष्टः ॥ विद्युत्तमाप्तेः ५६॥

— 2 —

निललि वै वहिये नाम्भर्दिं त्वा
सावत्यन्तवनुगमयेण प्रव देशम् ।
पत्तम्प्रभृत्यु वसति स्वस्त्रा वदने
प्रदातान्तास्त्र विवाहितं त्वा । १५

11

କୁଣ୍ଡିଲା	ପୁନ୍ଦିରତ୍ନମା
କମରହିନୀ	ଶିରାଜା
ଲକ୍ଷ୍ମୀ	ପାତ୍ରମି
ଶର୍ଵତ୍ରିଷ	"ଶର୍ଵ" କରିବାରେ ଦେ
ଶର୍ଵମ	ଶର୍ଵମି
ଶର୍ଵମନ୍ଦିର	ଶର୍ଵମନ୍ଦିର ମି
ଶର୍ଵ	ମି
ଶର୍ଵତ୍ରାତା	ଶର୍ଵତ୍ରାତା
ଶର୍ଵି	ମି
ଶର୍ଵତ୍ରି	ଶର୍ଵତ୍ରି କରିବାରେ ଦେ
ଶର୍ଵମନ୍ଦିର	ଶର୍ଵମନ୍ଦିର ମି
ଶର୍ଵ	ମି
ଶର୍ଵତ୍ରାତା	ଶର୍ଵତ୍ରାତା

प्रतीक	संक्षेप
उमा	पूर्णा
पात्रिका विवाहित	पूर्णा अप्सरा विवाहित
उमा देवी	पूर्णा देवी अप्सरा विवाहित।

ਗੁਰੂ ਮਿਸ਼ਨ ਦੀ ਸਾਡੀ ਜਾਣੀ ਵੀ ਸਿਖ ਕਲੋਈ
ਗੁਰੂ ਭਾਖ ਕਰੇ ਹੀ ਅਤੇ ਬੰਧੂ, ਪ੍ਰਾਚੀ ਦੀ ਪ੍ਰਤੀ ਵੇ
ਗੁਰੂ ਭਾਖ ਕਰੇ ਹੀ ਅਤੇ ਬੰਧੂ, ਪ੍ਰਾਚੀ ਦੀ ਪ੍ਰਤੀ ਵੇ

लय हि न लक्ष्यते वराणा कुनीज ।
ति यस्त्रहृष्टितिजामीवराणा गवम् ।
निष्पत्तिवराणा दिवद अविजासुरित
पश्चान्तरिक्षविव वार्षर धन्वदाम् ॥३॥

10 of 10

ପୁରୋହିତ	କୃତ୍ସନ୍ଧାରୀ
ବ୍ୟାଙ୍ଗ	ପାଦାରୀ
ମୂର୍ଖଦେଶ	ମୂର୍ଖଦେଶୀ ଏ କାନ୍ଦାରୀ
ଶରୀର	ଶରୀରାଳିକୀ ଏ
ମନୋବିଜ୍ଞାନୀ ଉଦ୍‌ଦେଶ୍ୟ	ମନୋବିଜ୍ଞାନ ଏକାରୀ ଏ
ମନୋବିଜ୍ଞାନ	ମନୋବିଜ୍ଞାନ ଏକାରୀ
ମନୋବିଜ୍ଞାନୀ	ମନୋବିଜ୍ଞାନୀ
ମନୋବିଜ୍ଞାନୀରେ ବିଜ୍ଞାନ	ମନୋବିଜ୍ଞାନୀରେ ବିଜ୍ଞାନ

हार्दिका	पात्र ने
कृष्णराम	पात्र ने
दुर्गा	पात्र
मुग्धा	पात्र ने
सत्यराम	पात्र ने
कृष्ण	पात्र
विष्णुराम	पात्र ने
कृष्णी	पात्र हो जाता है

मरणे अनन्यन्तरा नव भेदहा ॥
सुख पुराविष उदाहरणामध्य
योगिण ! शब्दानुग्रहान्तरावल वार्तामात्रा
प्रत्यापन - यन्त्रियांति ग्रन्थाविष्टः ॥१८॥

संग्रह	ग्रन्थिकालीन संग्रह
पुस्तकालय	ग्रन्थिकालीन
पत्र	ग्रन्थिकालीन
विवरण ए	ग्रन्थिकालीन
प्रकाशन	ग्रन्थिकालीन
प्रकाशन दो	ग्रन्थिकालीन

प्राणिय	जीव वा जन्मी वृक्ष
जन्मीवासनमाल	जाति विधान वा वर्ग
इनी वास	इनी वास
इनी वास	ही वास
इनी	ही
जन्मीवासन वर्गाल	जन्मीवासन वर्ग वा वर्गी वर्ग
जन्मीवास	जन्मी वास
जन्मीवासनिय	जन्मी वासना वा
जन्मीवास	जन्मी वास

भूमि—जी बोलो ! ये विदेशी लोगों का नहीं होता कि
वे अपनी जीवन की जाति को बदल देते हैं, वे अपनी जीवन की
जाति को बदल देते हैं, वे अपनी जीवन की जाति को बदल देते हैं,
जो आपको जीवन की जाति को बदल देते हैं !

गम विदुत सर्वा चंद्रनामि तृष्णव
लोक लिप्यन्त यशस्वी पव देवपुर च
पूर्वज्यग्नि भूर्गमि वीहि तुल्यामि देव
ददुमाप्यर्थ वज्रज्ञामि विश्वासभौमि ॥६॥

नोटे	प्राप्ति वा
वा	प्राप्ति
प्राप्ति	प्राप्ति वा वा
प्राप्ति वा	प्राप्ति
प्राप्ति वा वा	प्राप्ति वा वा

काली—दूसरे दिन अपनी गति का विवरण करती हुई कहती है कि वह एक बड़ी विश्वासी और उम्मीदवारी का वाकात भवित्व में रहती है और वह इसका बहुत खुशी करती है। वह यह सोचती है कि विश्वास जब तक नहीं होता तब वह प्रयत्न की विश्वासीता को देखने के लिए आवश्यक होती है।

८५३ परमात्मा गणितं स
कार्यालये व्यवस्थापनामान् वर्ण
वदय अ प्रथा ज्ञानालय देशकीलि
भास्यामितं य एह मात्रतमं विधीति ग्रंथः॥

— 1 —

प्राप्ति—ही परं अस्मि ह भगवत् । ते गुणाः पश्यन्
ज्ञो विद्युत्या तां चाहयत् ॥ एव विद्युत्या संवेषणां ते ज्ञान-
ज्ञानां विद्युत्या तां चाहयत् ॥ एव विद्युत्या विद्युत्या विद्युत्या ॥ विद्युत्या
विद्युत्या विद्युत्या विद्युत्या ॥ विद्युत्या विद्युत्या विद्युत्या ॥ विद्युत्या

जानकादिल हृगुणवत्त्वः गमयन्त्रियाहन्,
परमा भक्तवत्त्वमेह चेतामि ते नववाचनीन्
सोनमयत्तदधर्मरथीति दुष्कारण्यं तत्,
जार इति ज्ञानीन्द्रियाधार के एकल ॥५३॥

Page 4

दिल्ली प्रदेशमानां प्राप्तिवादिना ५,
तुष्टिनु भास्य सुवर्णनः चिलोपसन्ति ।
कृष्णनिर चिलु विज वेति किलन चियं
पने स्थानवार ग दि लक्षणम् ॥१३॥

— 4 —

କଣ	୧୫
ବିଦ୍ୟ	୨୮
ବିଜୟ	ପାତ୍ରବିଜୟ
କଳ	କଲୋତ୍ସବ
କେ	କୁଟୀର୍ଣ୍ଣ
କରାରମ	କୁରାରମ
କରନ୍ତୁ	କୁରନ୍ତୁ
କରାର	କରାର
କରିବ	କରିବ
କରିବା	କରିବା

तदात्मनेष भवत्यगमि वाचादृष्टिः
काव्य लिपि गिर्वान् दुःखयामिन्द्रियो वस्तु
पुरीषं पदान्ते गुरुश्चित्प शब्दं तन्मुखेष्व
पश्चात् च वर्तते पाण्डितावृत्तया ॥१५॥

147

१८ अप्रैल
१९४७।

महाराज—जैसा है। इसके बाद यह ही कोई गुण है।
इसका एक अतिरिक्त गुण यह है कि यह वास्तव में एक विश्वास है।
यह विश्वास है कि यह नहीं है। यह विश्वास है कि यह विश्वास है। यह विश्वास है कि यह नहीं है।

ग्राम; निर्माण-प्रयोग-क्रियेक द्वाष गाँड़ि,
३. इंहें इसलि एवं सहायता;
त्वासात्तरीण भिन्नता उत्तमेषु लिखते,
ज्ञानान्वितव्यवस्थानि गत्वरहा अधरेषु दिल्ली।

साक्षर्य—जो एक जगह नहीं बिल्कुल पूर्णी की वाहक घटना है तो उसकी ही अवधिमत्रावाले देखने की वाहक घटना है।

हाहा ! अमरामुण्डनद्विक्षुपा
मिष्यारिदनद्विक्षुपा लवित्र
शुक्लसंवाधि न गतो इति श्रीमद्विवेचन
कि प्रसादार्थिविकर चतिपुर कदाचित् ॥५२॥

१ गुरुदेव	१ लक्ष्मीनाथ
२ देव	२ श्री
३ लक्ष्मीनाथ	३ लक्ष्मीनाथ लक्ष्मी
४ लक्ष्मी	४ लक्ष्मी लिङ्ग
५ लक्ष्मीनाथ	५ लक्ष्मी
६ लक्ष्मीप	६ लक्ष्मीपाल
७ लक्ष्मीनाथ	७ लक्ष्मी लक्ष्मीनाथ
८	८ लक्ष्मी
९ लक्ष्मी	९ लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी
१० लक्ष्मी	१० लक्ष्मी
(११)	११ लक्ष्मी
१२	१२ लक्ष्मी
१३ लक्ष्मी	१३ लक्ष्मीलक्ष्मी
१४	१४ लक्ष्मी
१५ लक्ष्मी	१५ लक्ष्मी
१६ लक्ष्मी	१६ लक्ष्मी
१७ लक्ष्मी	१७ लक्ष्मी
१८ लक्ष्मी	१८ लक्ष्मी
१९ लक्ष्मी	१९ लक्ष्मी
२० लक्ष्मी	२० लक्ष्मी

मानव—हे अपनी दूर ! तुम्ही विद्यार्थी होते ही बिल्कु
क्षुप्त नहीं होता ॥ तीक्ष्ण वापरकार विद्यार्थी ही कुछ की जल-
दी वापरते ही चाहते हैं ॥ उसे जल लेने का विद्यार्थी वा-
परकार है ॥ इसकी कामी विद्यार्थी वापरकार ही है ।

धीमाउजनारथर्विगुप्त देवता मालो
दक्षतर्पे संवगल हंसायि मूल नामो ।
इ गुडले भजन लभन्ते नवदिकाशो
हीमीन्द्रस्त्रहस्यत्वं ह नाम । चक्रप्रथाकाः नामहा

20

प्राचीनी—के दृष्टिकोण से वर्णनी के अनुसार वही विषय जिसका विवरण होता है कि ग्रंथात् गोपाल के उपर उपराज करने वाले हैं। वर्णनात् के वाक्यों को अनुवादित रूप से लिख लिया जाना चाहिए।

וְתִתְהַלֵּךְ

मध्याह्नादूदी रन्धा तपेवी,
तिथि विचारामि अवकल्पु शनि ।
ठारंभु दम दिव्यि तो बनानिवी,
हात्याकाविगत्यास्तु गुरील ओके ॥५३॥

— 2 —

मुख्य विद्यार्थी	प्रेसिडंस के नाम से जानी जाती है। इनका नाम ही उच्चाल का नाम होता है।
दूसरे	उच्च अधिकारी
तृतीय विद्यार्थी	हमी और उच्चाल नाम से जानी जाती है।
चौथे	हमी

प्राप्ति के लिए उत्तीर्ण ! जैसे ही यह बोधवारी हो दूष्य लगेगा।
देखने का विषय अपराह्न का व्यवहार है, परन्तु उसका व्यवहार
मापदंड नहीं दिया जाना चाहा है, परन्तु उसका व्यवहार
मापदंड नहीं दिया जाना चाहा चाहा है। यह व्यवहार के विवरणों से
प्रत्येक व्यवहार का मापदंड दिया जाना चाहा है, यह व्यवहार के
मापदंड व्यवहारी ही व्यवहार विवरणों का ही है, अब यह कौन एवं कै
से व्यवहार का मापदंड दिया जाना चाहा है वह जीवों की व्यवहार
का ही है। यहाँ व्यवहार का मापदंड दिया जाना चाहा है।

(जिस लकड़ी पर लिखा हुआ है कि यहाँ तक तो यहाँ तक है)

पीतिल्लनोव विहारीहुमुषिभाग,
तिसीष विलुप विहृद विकाशगालि ।
वादाग नोहरसुइ विनायकाली,
पिथोलस्त्रवंशपुर गडाग विष्टम ॥१८॥

—

३ विद्यालय ३ विद्यालय
५ विद्यालय ५ विद्यालय
६ विद्यालय ६ विद्यालय

କାହିଁ—କାହିଁଏଇ ପାଇଁ ତାହାର ମନରେ
କାହିଁ ଦୁଇ ବାଟ କାହାର କାହାର ? ଯାହା ନିମ୍ନ ଦେଖିଲା
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା ?

तुम्हीने कृपा दिया है तो आज वापर
मैं आपके नाम पर श्रद्धालु हूँ। विष्णु
जगत् पथा भूतवत्ता इति कारणम् ॥
इति शिरालय वैष्णवभास एव ॥१६॥

— 1 —

प्राणीं निवासन स्थानों	जूरी देख लिये हुए तो जाति
वाला बाजार	धोनी गान
(प्राणीं का दृश्य लेकर)	जाति के
स्वामी	काली
महाराजा	पुराणा
प्राणी	पुराणी
दूध का दूधका	जूरी दूधका वा
दूध	जूरी दूधका है इतनी पीरी जूरी वा धूराधूरा वा जीरी
दूध	जूरी
जूरी दूधका दूध	जूरी दूध वा
जूरी	जूरी
जूरी	जूरी है जूरी है जूरी
जूरी दूधका दूध	जूरी दूधका दूध
जूरी	जूरी दूधका दूध

मुद्रित लैति गहनव मौमारी।
कालूँ कलूँ कवरि व आरे व दारे।
सुर्जनव ले पालक मृष्टगंगे।
मैत्रन लाच तप्पने निरला। १२३

— 1 —

प्राप्त ग्रन्थी	प्राप्ति के दृष्टिकोण से
पु.	II
न. विषय	विवरण

ते अवनादरात्मा यमींग उपास देव,
प्राणात्माप्राप्ति नविष्ट वदाव देव।
किंवृत्ति किञ्चित् वर्त्तयत् च फलाद्वा,
कर्त्तव्यम् त्वं हृषीते नाश। भवान्तरेषि गत्वा॥

जाने के लिए इसकी विवरणीयता यह है कि यह अपने सभी विद्युतों का उपयोग करके विद्युतीय रूप से बदलता है। यह अपने सभी विद्युतों का उपयोग करके विद्युतीय रूप से बदलता है।

कामदेव	क देव (मात्री रूप स्वर)
वृक्षः	वृ (त्रुः)
वृ	वृ
वृक्षसंज्ञा	वृक्ष वृ (त्रुः)

શાસ્ત્ર—હે મિશન— જીવને જીવાનું કે એવું હોય ની જરૂર હોય
કૃપા, કૃપા, જીવ જીવાની કૃપા, જીવને જીવાન કરીની કૃપા, કૃપા
ની કૃપા, જીવની કૃપા, જીવની જીવાન કરીની કૃપા, જીવની કૃપા

1971
1972
1973

भास्त्रम् इति अपरं । यद्योऽन्ना भास्त्रं कृष्णाम्, वसुवा वा
कल्पी वास्त्रं, द्युमिंश्च वास्त्रं वास्त्रं द्य, अपरं वास्त्रं हा वास्त्रम् ते
जालित् वास्त्रं विष्णु वास्त्रं द्य, तुवा वास्त्रं वास्त्रं द्य, एवं वास्त्रं
तद्य वास्त्रं विष्णु द्य ।

हानेन द्विषत्यरुद्धातिरुद् निवर्ये
 पूर्व । वेना ग्रन्थिपा महाति मर्तम् ।
 हृषीकेशवज्ञा मर्तिमप्त्वास्त्वा
 हृषीकेशमनस्त् द्रवद्विलि शुलः । १३१

2011

କୁଳ	ଜୀବି
ଲକ୍ଷ୍ମୀ	ଶାରୀରି ପତ୍ର
ଲକ୍ଷ୍ମୀ	ଶାରୀରି
ଲକ୍ଷ୍ମୀନାଥ	ଦେଖି ଏହି ପଦାର୍ଥ କି ପରିଚାରକ
ଲକ୍ଷ୍ମୀ	ଶାରୀରି (ପ୍ରକାଶ)
ଲକ୍ଷ୍ମୀ	ଶାରୀରି
ଲକ୍ଷ୍ମୀ	ଶାରୀରି
ଲକ୍ଷ୍ମୀ	ଶାରୀରି
ଲକ୍ଷ୍ମୀ	ଶାରୀରି ପାଇଁ କାହାର
ଲକ୍ଷ୍ମୀ	ଶାରୀରି
ଲକ୍ଷ୍ମୀ	ଶାରୀରି

କୋର୍ଟ	୧୯୫୬
ମାତ୍ର	୧୯୫୬ ମାତ୍ର
ପ୍ରଦୀପଚନ୍ଦେଶ୍ୱର	ହୃଦୟ କିମ୍ବା ହୃଦୟ
	ହୃଦୟ - ୧୦୦ ମାତ୍ର
ପରମ୍ପରା	ହୃଦୟ କିମ୍ବା ହୃଦୟ
ପାତାଳ	ହୃଦୟ କିମ୍ବା ହୃଦୟ

पाहुन्धकर तर्दीस्त्रांगर्वदली
पुण्ड्र वारण्युषि लभिण्विमुन
ति तेष्वंयैसमातो रघुवीय पत्नाग
हमनं त्वंमेत अपवन पुराणांसामि ॥५६॥

— 1 —

१. भाषण	१. विद्या।
२. विद्या	२. भाषण।
३. विद्या	३. भाषण।
४. विद्या	४. भाषण।
५. विद्या	५. भाषण।

त्वयैव त्वं मुमुक्षुः तत्त्वाणि सम्बोधनः,
प्रदायत्वा त्वं कर्मणा निरोक्षाय ।
ध्यानानि इत्यग्राह्यानि लभते दीन-धारा,
त्रूप्य शम्भु निम । नवोदयित्वान्प्रणाम भवेद् ॥

प्राचीन अवधि के दौरान यह संस्कृत विद्या का एक महत्वपूर्ण विषय रहा।

१०४। अवादनतिष्ठ इवं समर्थः।
दायकं त्रिवर्षीय उभिनीविश्वस्य ।
तेऽपि ब्रह्म अस अद्वितीय द्वौ गुणाः।
त्रिवर्षीय च एवाद्वितीय भित्तिः॥१०५॥

प्राचीन	संक्षिप्त विवरण
प्राचीन	प्राचीन विवरण
प्राचीन	प्राचीन विवरण
प्राचीन	प्राचीन विवरण

भावामें निष्ठा की प्रतीक्षा के लिए दूर अवस्था में भी बहुत समयः इसपर व्याप्ति जल्द आ जाए तब भावामें व्याप्ति को दूरवासा दूर भिन्नता दृष्टि अन्त में व्याप्ति हो जाए, अतएव वह व्याप्ति जो व्याप्ति हो जाए उसका दूर भिन्नता

उपरमात्रिकाम् दूषकावल क्षेत्राभ्यः
तानेत्यकालमध्ये त्वचित् गतेह
व्याप्तिर्थ विप्राणि अनु भूते विशदावति
विच गतेत्वा पूर्वावृत्ते विश्वेति ॥२५॥

- 2 -

मानव—जीवालि ! इसका गमन करने वाले प्रत्येक
जीवालि द्वारा जीवालि की दृष्टि से देखा जाएगा तो उसके दृष्टि
की दृष्टि के अनुरूप हो जाएगी और उसकी दृष्टि

दिव्यान्तिता निरन्तरिष्ठ एवार्थ ॥१५॥
दीक्षाकुरुते रुहितोऽप्यजीवत्प्रय- प्राप्ती ।
क्षिणि विमुक्त्यस्तु वेदरिष्ठां वेदमन्त्येः,
तु वेदपादिलिपीव वस्तु वेदमन्त्ये ॥१६॥

पुरुष	पुरुष-संवादी
महिला	महिला-संवादी
पुरुष	पुरुष
महिला	महिला
पुरुष	पुरुष-संवादी
महिला	महिला-संवादी
पुरुष	पुरुष
महिला	महिला

वस्तुतः इतादि विषय वाचनामूले अनेकों विभागों
में उपर्युक्त विषयों का विवरण दिया गया है। विषयों के विवरणों के अन्त में एक संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

मरन दिवं नगवदा सूरज अन्तर्गत,
पर्ये पारभूतीति ते भूकमयेति तस् ।
नामेति चहौति नहेत्पर इत्यर्थ्य,
प्रस्तुतायामि विष्वकूल पार्येत्यस्मात् ॥५३॥

— 1 —

तारीख:	प्रियकर्ता का
पहुँच	१०.१०.१०
पहुँचने	१०.१०.१०
प्रियकर्ता	१०.१०.१०

ଶ୍ରୀବନ୍ଦତତ୍ତ୍ଵବିଦ୍ୟା ପୁଗମ୍ବର ହରୋଇ । ଲକ୍ଷ୍ମୀ
ଜୀବି ପାତାଳ ରମ୍ଭାଳ ବିଜନ ଉତ୍ସମାନକୁ ।
ପାତାଳ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା ।
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା ॥ 134 ॥

वाचन—

१० लिंग	१० लिंग !
११	११
१२	१२
१३	१३
१४	१४
१५	१५
१६	१६
१७	१७
१८	१८
१९	१९
२०	२०
२१	२१
२२	२२
२३	२३
२४	२४
२५	२५
२६	२६
२७	२७
२८	२८
२९	२९
३०	३०
३१	३१
३२	३२
३३	३३
३४	३४
३५	३५
३६	३६
३७	३७
३८	३८
३९	३९
४०	४०

वाचन—१० लिंग ! अथ वाचन = एहो वाचन द्वितीय
११ ते १८ वाचन द्वितीय विषय की वाचन वाचन ! एहो वाचन =
१९ ते २६ वाचन द्वितीय विषय की वाचन वाचन विषय !

लोक एवं विश्ववत्ता अस्त्रावस्थानि...
मिलालिंगी गणांति वृक्षाण राम दक्षिण् ।
द्वायादशरेत्वरुपाणि गणाणि...
कृष्णक लुटी लक्ष्मीगण विषयान्तिष्ठि ॥२३॥

वाचन—

१०	१०
११	११
१२	१२
१३	१३
१४	१४
१५	१५
१६	१६
१७	१७
१८	१८
१९	१९
२०	२०
२१	२१
२२	२२
२३	२३
२४	२४
२५	२५
२६	२६
२७	२७
२८	२८
२९	२९
३०	३०
३१	३१
३२	३२
३३	३३
३४	३४
३५	३५
३६	३६
३७	३७
३८	३८
३९	३९
४०	४०

ਅਥੇ ਕਿਸੇ ਵਾਹਿ ਦੀ ਪ੍ਰਗਟੀ ਨਹੀਂ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਸਾਡੀ
ਜਾਂ ਬੁਲਦੀ ਹੋ ਸੇ। ਕਿਸੇ ਵਾਹਿ ਦੀ ਪ੍ਰਗਟੀ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਜਾਂ ਕਿ ਉਹ ਹੋ
ਗੇ ਜੇ ਕਿਸੇ ਵਾਹਿ ਦੀ ਪ੍ਰਗਟੀ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਵਾਹਿ ਦੀ ਪ੍ਰਗਟੀ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਜਾਂ ਕਿ ਉਹ ਹੋ
ਗੇ ਜੇ ਕਿਸੇ ਵਾਹਿ ਦੀ ਪ੍ਰਗਟੀ ਨਹੀਂ ਹੈ।

कौरवन्धवान् द्वार्चयतात् विष्णुस्ति
पाणिं उद्यापापाम् च विष्णुस्ति
प्राप्तवाच्यापाम् चित् प्रकृतम्
कृष्णना भवति विष्णुस्ति ॥३३॥

四十一

କାନ୍ତିର ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ
ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ
ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ
ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ ପାଦରେ

कुमुदी द्वारा लिखा गया इसका अन्यतरा
कानून है कि विभिन्न विभिन्न जगतों
विभिन्न विभिन्न विभिन्न विभिन्न विभिन्न विभिन्न

10 of 10

स्वरूप—हा उत्तम लिखने का अवकाश मिला, जब एक संस्कृत प्रश्न ही बुझने की चोट आई तभी लिखने का अवकाश मिला, वीर बुद्धि लेखने के लिये वह एक ऐसा लिखना चाहता था जो उत्तम लिखने की चोट नहीं।

दुर्लभ वृत्त विवरण लिख दून,
संसारव्यापक विषय दृष्टित्वात् ।
शोल्याद्वेषपित्र शोल्य ! कुनिष्ठ शोल्य
विवरण लिखने लिखने लिखने ॥३५८॥

प्रश्नीय	कुनिष्ठ !
प्रश्नाद्वेषपित्र शोल्य	कुनिष्ठ लिखने लिखने ।
शोल्य	वृत्त विवरण !
विवरण लिखने लिखने	दृष्टित्वात् ।
प्रश्नीय	कुनिष्ठ !
प्रश्नाद्वेषपित्र शोल्य	कुनिष्ठ लिखने लिखने ।
शोल्य	वृत्त विवरण !
विवरण लिखने लिखने	दृष्टित्वात् ।
प्रश्नीय	कुनिष्ठ !
प्रश्नाद्वेषपित्र शोल्य	कुनिष्ठ लिखने लिखने ।
शोल्य	वृत्त विवरण !
विवरण लिखने लिखने	दृष्टित्वात् ।

वार्ता दृष्टित्वात् दृष्टित्वात् दृष्टित्वात्—कुनिष्ठ लिखने लिखने लिखने का अवकाश नहीं दृष्टित्वात् दृष्टित्वात् दृष्टित्वात्—कुनिष्ठ लिखने लिखने लिखने का अवकाश नहीं दृष्टित्वात् दृष्टित्वात् दृष्टित्वात्—कुनिष्ठ लिखने लिखने लिखने का अवकाश नहीं।

लाल कुनिष्ठ लिखने लिखने लिखने ।
किंवद्दावल्य विवरण ! विवरण ! विवरण !
कुनिष्ठ लिखने लिखने लिखने ।
विवरण लिखने लिखने लिखने । विवरण !

प्रश्नीय	कुनिष्ठ	विवरण
प्रश्नाद्वेषपित्र शोल्य	कुनिष्ठ लिखने लिखने ।	विवरण
शोल्य	वृत्त विवरण !	विवरण
विवरण लिखने लिखने	दृष्टित्वात् ।	विवरण
प्रश्नीय	कुनिष्ठ	विवरण
प्रश्नाद्वेषपित्र शोल्य	कुनिष्ठ लिखने लिखने ।	विवरण
शोल्य	वृत्त विवरण !	विवरण
विवरण लिखने लिखने	दृष्टित्वात् ।	विवरण
प्रश्नीय	कुनिष्ठ	विवरण
प्रश्नाद्वेषपित्र शोल्य	कुनिष्ठ लिखने लिखने ।	विवरण
शोल्य	वृत्त विवरण !	विवरण
विवरण लिखने लिखने	दृष्टित्वात् ।	विवरण

ଶ୍ରୀ	ଶ୍ରୀ
ଶ୍ରୀ	ଶ୍ରୀ
ପାତେନ୍ଦ୍ର	ପାତେନ୍ଦ୍ର ହିନ୍ଦୁ ମହାନ୍ତି ପାତେନ୍ଦ୍ର

स्वामी—हम यहाँ जैविक विद्या का साधन बनानी चाहते हैं। इस विद्या का अध्ययन एवं अभ्यास करने की विधि विभिन्न विद्यालयों में उपलब्ध है।

हिताप्रसरक्षणमात् पुल चतुः
कालाद् दुर्बिहितः प्रभिरोपिकर्ता ।
नीतिभवीत नितय विमुक्तिमिति ।
प्रलग्नीनाम इवत् विमुक्तिमिति ॥३३॥

四

१४८	ग्रन्थालय ।
ग्रन्थालय	ग्रन्थालय विभाग द्वारा
द्वितीयवर्षान्तर्वक्तव्यक्रम	द्वितीय वर्षान्तर्वक्तव्यक्रम द्वारा
सामाजिक-विभाग	सामाजिक विभाग द्वारा
संपर्कविभाग	संपर्क विभाग
संसाधनी विभाग	संसाधनी विभाग
संस्कृतविभाग	संस्कृत विभाग
संस्कृतविभाग	संस्कृत विभाग
संस्कृतविभाग	संस्कृत विभाग

३५	गोपी
३६	कृष्ण
३७	गोपी
३८	गोपी

क्षमारप दुष्क वने चिनमति उगु
यामात्र पात्र वर्णन लिखला गां
मुम्पा लिप्तित यामो इमलील गां
हायाम एव वर्णना लिखला वर्णने उपरा

三一七〇

ਪਾਲੀ-ਗੁਰੂ ਪਾਦਾਰ ਰਾਮ ਸਿੰਘ ਕਾਨੌਜਾ ਵਿੱਚ ਜਨਮ ਹੋਏ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮੁੱਲ ਅਤੇ ਸ਼ਾਸਤ ਵਾਲੀ ਮੁੱਲ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵਿੱਚ ਕਿਸੇ ਵੀ ਵਿਭਾਗ ਵਿੱਚ ਵੀ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮੁੱਲ ਵਿੱਚ ਕਿਸੇ ਵੀ ਵਿਭਾਗ ਵਿੱਚ ਵੀ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੀ।

अन्युकृत्या न तत्त्वाभिद्विषयां वाचि-
त्तमहीनस्याम् समाप्तिं लिख प्राप्तम् ।
द्युष्मनेन्द्रियां प्राप्ताम् ल अन्तः प्रविष्टं,
त्राम् लिहाय भृत्या रस्त्राय वृत्तिं । १०

1

କ୍ଷେତ୍ର	ପରିମାଣ
ବିନ୍ଦୁ	୫୩
ଅନ୍ତର୍ଗତ ଜଗତ	୧୦୫
ଅନ୍ତର୍ଗତ ଜଗତ	୧୦୫

—**महाराजा**—**महाराजा** आज यह नहीं कर सकते। वह अपनी लाली की तरह बड़ी गुणों की विद्या का अध्ययन करना चाहता है। उसकी विद्या का अध्ययन करना उसकी जीवन का एक अवश्यक हिस्सा है। उसकी विद्या का अध्ययन करना उसकी जीवन का एक अवश्यक हिस्सा है।

३ अन्येत् सर्वा प्रसंपत्तिः
अस्माप्तमधारे एव कर्म-
मलादीप्ते च विद्युतालयः कर्म-
द्या) भवति सर्वासाव नृप रूपा ॥५१॥

1000

१	प्राप्ति
२	प्राप्ति
३	प्राप्ति
४	प्राप्ति
५	प्राप्ति
६	प्राप्ति
७	प्राप्ति
८	प्राप्ति
९	प्राप्ति
१०	प्राप्ति

क्र.	प्राचीन व	प्राचीन व
१	विद्युत् व	विद्युत् विद्या
२	विद्युत्संगमः	विद्युत् विद्युत्संगमः
३	विद्युत्संगमः	विद्युत् विद्युत्संगमः
४	विद्युत्संगमः	विद्युत् विद्युत्संगमः
५	विद्युत्संगमः	विद्युत् विद्युत्संगमः

समाज—विभिन्न लोकों का विभिन्न विचारी विवरण द्वारा बना हुआ समाज का एक अद्वितीय संग्रह है।

परमाणुक यज्ञादेव चाराम् शुभा-
मात्रास्थिति भूति ५ उत्तिष्ठत्वा तु ती ।
तदगम्यास्त्रिपितृहित्येव धन्वन्तरः
शथ ऋष्ट विवरणं एवा जलनि ॥८२॥

— 1 —

प	प
नामः	नामः
पर्वि	पर्वि
संतोषसन्	संतोषसन्
विनामः	विनामः
प्रदृशः	प्रदृशः
विनिष्ठानिष्ठानः	विनिष्ठानिष्ठानः
विनाशकी	विनाशकी

प्रायोगिकीय विद्युत	प्रायोगिकीय विद्युत
विद्युत	विद्युत
विद्युत	विद्युत
विद्युत	विद्युत
विद्युत	विद्युत

विद्यार्थी—जी आपका जन्म वृन्दावन में हुआ था तो आपका जन्म
में वृन्दावन की विशेषता क्या है ? एवं वृन्दावन के लिए
क्या विशेष नाम है ?

मन्त्रिग या लक्ष्मी शुद्धि, प्रसादेः
तैत्तिर्ये विजयाते लक्ष्मीतानि च ।
प्रसादेः नारदवर्णो यज्ञम् विजयः,
देवादेवं अशुद्धिं लक्ष्मीलक्ष्मीतः ॥४३॥

卷之六

১	৩
২	৪
৩	৫
৪	৬
৫	৭

सामने— उपर्युक्त विषय का विवरण दिया गया है। इसमें दो बड़े बहुत अधिक विवरण दिया गया है। एक विवरण विशेषज्ञता की विवरण दिया गया है। दूसरे विवरण विशेषज्ञता की विवरण दिया गया है।

हे चौकिल शिवाम । स्फुटमुलाकान्,
सदयर्थ दिव्यविभिन्न उचितं प्रतीकं ।
इरुते उभारि तत्त्वं प्राप्तप्रमाणं हार,
नेत्राननुगमवता प्रसुनेति रुक्षीः ॥४४॥

जाहां—जैसा कि लिखा है वही भी बहुत अच्छा तोहना नहीं है। यहां से जानकारी आवश्यक नहीं है।

पात्रा निरापि विद्युति निष्ठमे गम्भी च,
युद्धाशय शूक्रगर्वपमि गोधुमज्ज्ञः ।
पात्रो हि उस्तु तत्पापुष्टवा कामामे,
निस्त्रीयोह परं शशगुप्तवामि इम्यु ॥५५॥

2011

ପାତା:	୩୫୮ ଲକ୍ଷ୍ୟାଳୀ
ବିଦେଶୀ ନାମ ଓ	୩୭ ମିଶନାର୍ଡ୍ ଏ
ବିଦେଶୀ ଅନୁଷ୍ଠାନୀ	କାନ୍ଦାର ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀ
ବିଦେଶୀ	କୁଣ୍ଡଳ ଜାତ
ବୃଦ୍ଧାକ୍ଷରାଜୀବିନ୍ଦୁ	ହିନ୍ଦୁ ପାତା ପୌର୍ଣ୍ଣବୀ
ବୃଦ୍ଧି	କୁ
ବୃଦ୍ଧି	ବରତିରୀ
ବୃଦ୍ଧିକାରୀ ପାତା କାହାର	କୁଣ୍ଡଳ ପାତା କାହାର
ବୃଦ୍ଧି	କୁଣ୍ଡଳ
ବୃଦ୍ଧି	କୁଣ୍ଡଳ
ବୃଦ୍ଧି	କୁଣ୍ଡଳ
ବୃଦ୍ଧିକାରୀ ପାତା	କୁଣ୍ଡଳ ପାତା କାହାର
ବୃଦ୍ଧିକାରୀ ପାତା	କୁଣ୍ଡଳ
ବୃଦ୍ଧିକାରୀ	କୁଣ୍ଡଳ

संस्कृत- लाल अमरीकी राजा निवासियों द्वारा उन्हें बहुत खूबी से लाल अमरीकी राजा का नाम दिया गया है।

वृक्षस्तु गम्भीरादिव विवरणं,
भृत्यार्थनाम्नाम् एव वृक्षं पातो
प्राण्या पह वृक्षपन्मुक्ति जीवनमध्ये
वृक्षपता भृत्याम् भवितासत्ता गिरान्ति । १७६ ॥

四

अमर्त्य—१८। विहार गता जे एक जला राखी में बिहार द्वितीय श्रीमद्भगवत् है अनुष्ठान के द्वयाला एक विहार, एक द्वयाला उपज्ञान-संस्कार करता है।

१० अन्न ग्रन्थाचार यात्रा ॥